International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN 2250-253x, (Print), E- ISSN 2320-544x, Issued -6, Vol- I, June, 2013

शोध पत्र

सौंदर्य एक अवधारणा: भारतीय विद्वानों के मतानुसार

* डॉ. नित्यप्रिया श्रीवास्तव

* डी. फिल, संगीत प्रवीण, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जीवन जीने के लिए शारीरिक सुख ही नहीं, अपितु मानसिक सुख भी अत्यधिक आवश्यक है और मानसिक सुख के लिए संगीत एक प्रमुख माध्यम है, संगीत एवं सौंदर्य एक ही सिक्के के दो पहलु हैं। किन्तु सुन्दरता का अर्थ प्रत्येक व्यक्ति के लिए भिन्न–भिन्न होता है।

''भारतीय वाङ्मय में 'सौन्दर्य' शब्द का प्रयोग अधिक प्राचीन नहीं है। वेदों में और उपनिषदों में यह शब्द उपलब्ध नहीं होता, किन्तु सौन्दर्य की अवधारणा उसके वाचक–व्यंजक शब्दों तथा उक्तियों का अभाव नहीं है। सौन्दर्य का प्रयोग विभिन्न अर्थों में प्राचीन काल से ही हमारे मनीषियों ने किया है।यदि सौन्दर्य का सन्धिविच्छेद करे तो कुछ इस प्रकार होगा –

''सुन्दरय''– सु + उन्द + अरन। ''सु'' का अर्थ है ''सुष्ठ'' अथवा ''भली प्रकार'' से ''उन्द'' का अर्थ है ''आर्द्र करना'' ''अरन'' कृत्य वाच्य प्रत्यय है अतः सुन्दर का अर्थ है – भली भांति आर्द्र करने वाला 'सु' (उपसर्ग) अर्थात अच्छी प्रकार और नन्दयति अर्थात् प्रसन्न करता है, वह सुन्दर है। अतः जो अच्छी प्रकार से प्रसन्न करता है, वह सुन्दर है। सुन्दर का आर्द्र करने वाला अथवा आनन्द प्राप्त करने वाला गुण ही 'सौन्दर्य' कहलाता है अतः सौन्दर्य भाववाचक संज्ञा है। सौन्दर्य का व्यूत्पत्ति मूलक अर्थ है सुन्दर + व्यम् त्र सुन्दर होने का भाव सुन्दरता''।[1]

सौन्दर्य की विवेचना प्राचीन समय से किसी न किसी रूप में होती रही है, भले ही उसके लिए एस्थेटिक शब्द का प्रयोग हो न हो। भारतीय संगीत का जो आधार ग्रन्थ नाट्यशास्त्र है उसमें भरत ने विविध कलाओं आदि के संदर्भ में सौन्दर्य के सिद्धान्त लक्षण व गुणो को इस प्रकार बताया है–भारत ने ब्रह्मा से कहा–दीयतां भगवन् द्रव्यं कैशिक्यारू सम्प्रयोजक।

नृत्तांगहारसम्पन्ना रसभाव क्रियात्मिका।।44।।
दृष्टा मया भगवतो नीलकण्ठस्य नृत्यतः।
कैशिकी श्लक्ष्णनेपथ्या शृंगाररससम्भवा ।।45।।

अर्थात ''हे भगवान, कैशिक वृत्ती के समुचित प्रयोग के लिए सामग्री दीजिए। भगवान नीलकण्ठ के नृत्य के समय मैंने कैशिक वृत्ति को देखा था जो शृंगार रस से उत्पन्न नृत्य के विविध अंगहारों से सम्पन्न तथा रसक्रिया व भाव से अधिष्ठित है, तथा जिसमें सुन्दर वस्त्रों की भी आवश्यकता है।'' [2]

प्रत्येक व्यक्ति के लिए सौन्दर्य की परिभाषा एक समान हो यह आवश्यक नहीं है, किन्तु यदि सूक्ष्मता से निरीक्षण करे तो प्रत्येक वस्तु में अलग–अलग सौन्दर्य विद्यमान है, हमारे चारों ओर अद्भुद सौन्दर्य बिखरा पड़ा है जो हमारे मन को आनन्द से भर देता है और उस पर ब्रह्म के और करीब करता है। महाकवि कालिदास ने अपनी रचनाओं में सौन्दर्य का विशेष ध्यान रखा है। कालिदास के अनुसार–

''कलाकार अपने मानसी कल्पना के द्वारा जिस सौन्दर्य की रचना करता है वह एक विलक्षण सृष्टि होती है। शकुन्तला के माध्यम से विधाता के रूप के सर्वश्रेष्ठ उपादानों का संचय कर, उनके आधार पर अपनी मानसी कल्पना के द्वारा जिस सौन्दर्य की रचना की, वह एक विलक्षण सृष्टि प्रतीत होती थी।''[3]

सौन्दर्यशास्त्र अपने आपमें एक विस्तृत विषय है। इसके बारे में हमारे भारतीय विद्वानों ने प्राचीन काल से ही भिन्न–भिन्न रूपों में इसका वर्णन किया है फिर चाहे ऋग्वेद हो या फिर रामायण महाभारत काल हो इन महाकाव्यों में सौन्दर्य का वर्णन मिलता है। **वेदों उपनिषदों में सौन्दर्य की अवधारणा–**ऋग्वेद में सौन्दर्य की ''श्री''' नाम से सम्बोधित किया गया है।अथर्ववेद में भी 'सुन्दर' के अभिप्राय से अन्य अनेक शब्द मिलते हैं–

''आ नो अग्ने सुमति सभलो गभेदियां कुमारी सह नो भगेन जुष्टा करेषु समनषु बल्गुरोष पल्या सौभग्भस्वस्यौ''

अर्थात– इसमें सम्भवतः (यथाविधि सम्भाषण तथा निरूपण करने वाला वर) सुभति (सुन्दर बुद्धि वाली कुमारी) जुष्टा (प्रिय) 'समनेषु (साधु विचार वाले) 'वल्गु' मनोहर आदि शब्दों का प्रयोग सौन्दर्य के अभिप्राय से हुआ है।''[4,5]

वेदो में सौन्दर्य का प्रयोग अनेको अर्थ में किया गया है, वेदो उपनिषदो में यह स्पष्ट दिखता है कि सौन्दर्य सभी व्यक्तियों में व्याप्त है और यही सौन्दर्य प्रत्येक प्राणी को उस परमात्मा के निकट लाती है (जोड़ती है)। सौन्दर्य में आनंद है और आनंद में ही यह व्याप्त है।

''तैत्तिरीय उपनिषद में ही आनन्द और रस को एक दूसरे का पूरक बताते हुए कहा गया है–

''रसो वै सः। रसं ह्येवायंलब्ध्वाऽऽनन्दी भवति'' [6]

रामायण महाभारत कालीन सौन्दर्य विषयक अवधारणाएं–

रामायण– सौन्दर्य का उल्लेख 'रामायण' ग्रन्थ में पर्याप्त मात्रा में मिलता है जैसे– चारू, रूचिर, रमणीय, शोभन, रम्य, कान्त आदि। संगीत के सौन्दर्य के बारे में रामायण का यह श्लोक पर्याप्त प्रकाश डालता है–

"पाठ्ये गेये च मधुरं प्रमाणैस्त्रिभिरन्वितम्।
जातिभिः सप्तभिर्युक्तं तन्त्रीलय समन्वितम्।।[7]

इसमें सौन्दर्य तत्वों माधुर्य, स्वरगीत का प्रभावपूर्वक समायोग तन्त्रों–लय का समन्वय आदि का स्पष्ट उल्लेख है। महाभारत के विभिन्न स्थानों पर भिन्न शब्दों का प्रयोग सौन्दर्य के लिए किया गया है **जैसे**– सुन्दरी, चारू मनोहर, कान्त, सुभग चित्तप्रसादिनी, प्रियदर्शन इत्यादि। ''रामायण महाभारत ग्रन्थों में सौन्दर्यानुभूति में प्रायः इन्हीं तत्वों का उल्लेख हुआ है। उनमें सुन्दर के लिए शुभदर्शन, प्रियदर्शन, अभिरामदर्शन आदि विशेषणों का प्रयोग हुआ है जिससे यह ध्वनित होता है कि सौन्दर्यानुभूति एक प्रकार की सुखद ऐन्द्रिय–मानसिक अनुभूति है। सौन्दर्य से चित्त का प्रसादन होता है।[8]

प्रकृति के अन्तर्गत आने वाली सभी प्राकृतिक वस्तुएं जैसे– आकाश, पेड़ पौधे, जंगल, पहाड़, प्रभात, वायु, जल इत्यादि सभी में एक आकर्षण है जो हमें आकर्षित कर हमारे हृदय में उनके प्रति सौन्दर्य का भाव उत्पन्न करती है। प्रायःयह तभी होता है जब कोई वस्तु सुन्दर या अनोखी हो किन्तु यहाँ एक बात स्पष्ट है कि सुन्दरता के मायने प्रत्येक प्राणी के लिए अलग होता है। कुछ लोग सिर्फ सुन्दर वस्तु को देखकर ही सुन्दरता या आनन्द की अनुभूति करते हैं तो कुछ व्यक्ति अनाकर्षित वस्तु को देखकर भी उसमें भी सौन्दर्य तलाश करते हैं। डा0 हरिद्वारी लाल शर्मा का मत है कि ''सुन्दर का सौन्दर्य गुण है, सुन्दर वस्तु के सन्निकर्ष से रस की अनुभूति होती है।''[9]
''जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी'' [10]

उपरोक्त श्लोक जो गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'रामचरित मानस' में लिखा है इसका अर्थ हे जिसकी भावना जैसी होती है उसको उसी रूप में भगवान दिखते हैं। यह सौन्दर्य के पक्ष में भी पूर्णतया सटीक बैठती है कि सोन्दर्य किसी वस्तु में नहीं अपितु अलग–अलग व्यक्तियों के भावों में निहित है जो जिस भाव से किसी वस्तु में सौन्दर्य को देखता है उसे उसी वस्तु में सौन्दर्य के दर्शन होगें।

डॉ0 कांतिचन्द्र पाण्डेय के अनुसार– भारतीय सौन्दर्य–दृष्टि में काव्य, संगीत और वास्तु ये ही तीन प्रमुख कलाएँ हैं। काव्य सभी कलाओं में उच्चतम है। पूर्व और पश्चिम दोनों ने ही इसे माना है। नाट्य काव्य का सर्वोच्च परिसकृत रूप है। भारत में इसलिए ललित कलाओं के दर्शन के रूप में सौन्दर्यशास्त्र को नाट्य परिप्रेक्ष्य में ही मुख्यतः देखा गया है।[11]

भारतीय विद्वानों के सौंदर्य विषयक विभिन्न मत–

भारतीय सौन्दर्य शास्त्र का प्राविधान प्राचीन काल से ही विभिन्न रूपों में हुआ है।सौन्दर्यशास्त्र की विवेचना स्वतंत्र रूप में भले ही प्राप्त नहीं होता है किन्तु सौन्दर्य से सम्बन्धित विचार शुरू से ही मिलते हैं। कुछ विद्वानों ने इसे (सौन्दर्य को) रस से तथा कुछ विद्वानों ने इसे अलंकार से जोड़ा है अर्थात् भारतीय वाङ्मय में रस एवं अलंकार में ही शुरू से सौन्दर्य का भाव निहित है।

शास्त्रमानेन यो रम्यस्त रम्यो नान्य एव हि ।।107।।
शास्त्रमानविहीनं यदरम्यं तद्विपश्चिताम्।
एकेषामेव तद्रम्यं लग्नं यत्र च यस्य हृत्।।

शास्त्रीय प्रतिमानों के अनुसार सुन्दर है वही वस्तुतः सुन्दर है, अन्य नहीं जो शास्त्रीय प्रतिमानों के अनुकूल नहीं है वह असुन्दर है– ऐसा पण्डितों का मत है क्योंकि जो किसी व्यक्ति–विशेष के चित्त का अनुरंजन करता है वह केवल उसी को सुन्दर लगता है।''[12]

''कुमार संभव'' के रचयिता महाकवि कालिदास के अनुसार–सच्चा सौन्दर्य वह है जो पाप वृत्ति की ओर अग्रसर न करके सात्विकता की प्रेरणा देता है।[13] काव्यपक्ष एवं संगीत में हमारे मनीषियों ने सौन्दर्य को अध्यात्मिकता से भी जोड़ा है उनके अनुसार सत्य ही उस परमात्मा से मिलने का रास्ता बनाता है और वह पर ब्रह्म ही सुन्दर है इसके अलावा भी सौन्दर्य के प्रति सबके विचार अलग अलग हैं जैसे की–

भामह के अनुसार–

किञ्चिदाश्रय सौन्दर्याद्धत्ते शोभामसाध्वपि।
कान्ताविलोचनन्यस्तं मलीमसमिवाञ्जनम्।।

रमणी के नेत्रों में लगे अंजन के सदृश कहीं आश्रय (आधार) के सौन्दर्य के कारण (भी) दोष रमणीयता धारण कर लेता है।''[14]

सुमित्रा नन्दन पन्त के अनुसार–

सुमित्रा नन्दन पन्त जी हिन्दी साहित्य के उत्कृष्ट कवियों में से एक हैं, जिनकी अधिकतर कविताएं प्रकृति एवं उनकी सुन्दरता को दर्शाती है। पन्त जी को प्रकृति के रसिक कवि के नाम से भी जानते हैं। उन्होंने सौन्दर्य के बारे में अपने विचार इस इस प्रकार व्यक्त किये हैं–

"यही प्रज्ञा का सत्य स्वरूप हृदय में बनता प्रणय अपार।
लोचनों में लावण्य अनूप लोकसेवा में शिव अविकार।।
स्वरों में ध्वनित मधुर सुकुमार सत्य ही प्रेमोद्गार।
दिव्य सौन्दर्य स्नेह साकार भावनामय संसार।।"[15]

आनन्द ही सौन्दर्य की अनुभूति कराता है फिर वह किसी वस्तु या व्यक्ति को देखकर, सोचकर या फिर महसूस करके ही क्यों न प्राप्त हो। किसी वस्तु में व्याप्त सौन्दर्य ही व्यक्ति को आनन्द की चरमावस्था पर ले जा सकता है।

कुंतक के अनुसार–

अन्यच्च कीदृशम्–किमव्यामोदसुन्दरम। किमपि अव्ययदेश्यं सहृदयहृदयसंवेद्यं, आमोदरू सुकुमारवस्तुधर्मो रंजकत्वं नाम, तेन सुन्दरं रंजकत्वरमणीयम्।
' 'किसी अपूर्व आमोद के कारण सुन्दरं। 'कुछ' अनिर्वचनीय,

सहृदय–संवेद्य जो आमोद अथवा सुकुमार वस्तु का रंजकत्व नामक धर्म है उसके कारण सुन्दर अथवा रंजकत्व –रमणीय! आहलादकारी होने के कारण रमणीय (वर्णन को तद्विदाहादकारी कहते हैं)''[16]

कुन्तक के अनुसार– सुन्दर का अर्थ है– रंजक होने के कारण रमणीय। इस प्रकार सुन्दर व रमणीय पर्यायवाची है और उनका सामान्य धर्म 'रजकत्व'।

विश्वनाथ के अनुसार–

"व्यंग्यमसुन्दरत्वेन भेदास्तस्योदिता अष्टौ।"

गुणीभूतव्यंग्य काव्य में व्यंग्य असुन्दर होता है। इस मध्यम काव्य गुणीभूतव्यंग्य– के आठ भेद होते हैं।

''उपयुक्त उद्धरणों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि भारतीय काव्यचिंतन परम्परा में, पारिभाषिक अथवा शास्त्रीय अर्थ में भी, 'सौन्दर्य' शब्द का प्रयोग निरन्तर होता रहा है। सौन्दर्य यहां चक्षुरन्द्रिय का विषय नहीं है, मन का भावना अथवा कल्पना का ही विषय है।'' [17]

दासगुप्ता के अनुसार–

''वास्तविक सौन्दर्य आत्मा में होता है, अनुभूति को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। भारतीयों ने सदैव ही आध्यात्मिक सौन्दर्य को ही महत्व दिया है।''[18]

'भारतीय सौन्दर्य दर्शन संतुलित एवं समाकलित दर्शन है जो सौन्दर्य का विचार जीवन के अन्य मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में करता है। वह सौन्दर्य का स्वतंत्र महत्व इस अर्थ में स्वीकार करता है कि सत्ता धर्म, अर्थ काम में निमज्जित नहीं होती है। भारतीय कलाओं का एक सीमांत काम व अर्थ से दूसरा धर्म और मोक्ष से जुड़ा हुआ है।''[19]

''सौन्दर्यशास्त्र जहाँ सौन्दर्यानुभूति का विवेचन करता है तब इसका क्षेत्र मानसिक तथा भावात्मक रूप से जुड़ जाता है और यहाँ सौन्दर्यशास्त्र मनोविज्ञान के निकट आ जाता है क्योंकि सौन्दर्य–भावना मन का ही गुण है। सौन्दर्यानुभूति, कलानुभूति व रसानुभूति समानार्थक शब्द हैं। सौन्दर्यानुभूति, कलानुभूति व रसानुभूति समानार्थक शब्द हैं। सौन्दर्यशास्त्र में सौन्दर्य पक्ष ही सर्वोपरि है और प्रमुखतः ललित कलाओं के समग्र सौन्दर्य पक्षों का सूक्ष्मता से अध्ययन ही सौन्दर्यशास्त्र का विषय होता है।'' [20]

निष्कर्षतः

अनेक ग्रन्थों में सौन्दर्य के अनेक रूपों की चर्चा हुई है किंतु यदि सूक्ष्मता से निरीक्षण करें तो स्वतंत्र विद्या के रूप में सौन्दर्यशास्त्र य ।मतजीमजमेद्ध सामने उभर कर नहीं आता है। यह अवश्य है कि बिना सौन्दर्य के वर्णन के कोई शास्त्र पूरा नहीं हो सकता क्योंकि सौन्दर्य न होगा तो रस की प्राप्ति नहीं होगी और रसविहीन काव्य या संगीत प्राणहीन शरीर के समान होगा।

इन पक्षों पर गौर करने पर यह अवश्य समझ में आता है कि ऋग्वेद से लेकर आज तक के ग्रंथो व काव्यों में सौन्दर्य का प्रयोग अवश्य दिखता है, इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सौन्दर्य विषय के रूप में भले ही हमारे शास्त्रों में नहीं मिलता किंतु सौन्दर्य का प्रयोग शास्त्रों व काव्यों में रस, अलंकार व अन्य रूपों में अवश्य मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. भारतीय सौन्दर्य शास्त्र का तात्विक विवेचन एवं ललित कलाएं पृष्ठ 23
2. नाट्यशास्त्र, प्रथम अध्याय, रघुवंश पृष्ठ–20
3. भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका डॉ0 नागेन्द्र पृ0 168
4. सौन्दर्य, पृ0 159
5. अथर्ववेद भाषा भाव्यम द्वितीय काण्डम सूक्त 36
6. सौन्दर्य पृ0 159
7. चित्तप्रसादिनी वाला देवानमपि सुन्दरी। वनपर्व– 53–14
8. चित्तप्रसादिनी वाला देवानमपि सुन्दरी। वनपर्व– 53–14
9. हरिद्वारी लाल शर्मा– साहित्य में सौन्दर्य तत्व, पृ0 83
10. रामचरितमानस– गोस्वामी तुलसीदास
11. Comparative Aerthetics Vol.-1 Dr. K.C. Pandey
12. शुक्रनीति अध्याय'–4 प्र04
13. कुमार सम्भव, 5 , 36
14. पल्लव – सुमित्रा नन्दन पन्त, पृ0 158–59
15. पल्लव–सुमित्रा नन्दन पन्त पृ0158–159
16. वक्रोतिजीवितम् आत्माराम एण्ड संस पृ0 97
17. भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका– डा0 नागेन्द्र पृ0 85
18. सौन्दर्य– डा0 राजेन्द्र वाजपेयी– पृ0 181
19. भारतीय सौन्दर्य शास्त्र की भूमिका– पृष्ठ 204–05
20. भारतीय संगीत का सौन्दर्य विधान–मधुरलता भटनागर– पृ0 28–29